गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता–वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

Dr. Beena Yadav,

Associate Professor,

Dept. of B.Ed., Khun Khun ji Girls P.G. College, Lucknow.

शोध सारांश

गाँधी जी भारत के उन महापुरूषों में से एक हैं, जिन्होंने भारत की शैक्षिक व्यवस्था का अध्ययन किया तथा इससे जुड़ी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। गाँधी जी, स्वय में एक सुधारवादी राजनीतिक विचारक थे। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि भारत में शिक्षा सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन और विकास के माध्यम से अपने को प्रतिबिम्बित करती है। इस रूप में यह आवश्यक है कि एक ओर तो जीवन के भौतिक संसाधनों में अत्यधिक रूचि को दूर किया जाए, तो दूसरी ओर जीवन के आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति जनमानस में आस्था को राष्ट्रीय धरातल पर विकसित किया जाए। एक ऐसे समय में जब परिवर्तन की गति तेज है तो यह आवश्यक होगा कि शिक्षा के माध्यम से समाज की चुनौतिया का मुकाबला करने के लिए रणनीति तय की जाए। गांधी जी जीवन पर्यन्त, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्ष करते रहे।

गांधी जी एक शिक्षाशास्त्री नहीं थे क्योकि उन्होनें शिक्षाशास्त्र के सिद्धांतों की विवेचना नहीं की परन्तु अपने सामाजिक वक्तव्यों के दौरान वे समय–सयम पर शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर अपने विचार रखते रहे। बुनियादी शिक्षा के सम्बन्ध में उनके विचार आज भी प्रासंगिक है।

सूचक शब्द – *बुनियादी, स्वावलम्बी, हस्त कौशल, स्व समर्थित, सार्वभौमिक, आत्मनिर्भरता, कार्य अनुभव, कार्य संस्कृति*

प्रस्तावना

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को कौन नहीं जानता? नवयुग के चेतना के प्रतीक, विचारक, शिक्षा शास्त्री, सन्त, दार्शानिक और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सर्वोच्च महारथी के रूप में उनकी ख्याति देश की सीमाओं को पार कर सम्पूर्ण विश्व में फैल गयी थी। वे एक महान समाज सुधारक राजनीतिज्ञ और सच्चे भक्त थे। बच्चों और भारत के भोले–भाले नागरिको के प्यारे बापू है। बुद्धि जीवियों और विचारकों के लिए वे महात्मा है। राष्ट्रीय महत्व की दृष्टि से वे एक अन्तर्राष्ट्रीय नेता, उपदेष्टा तथा चिन्तक है। सम्पूर्ण विश्व हाड़ माँस के इस दुबले–पतले किन्तु अद्वितीय महामानव की विनम्रता के आगे नतमस्तक होकर उनके जीवन को प्रेरणाश्रोत मानता है। अल्वर्ट आइन्टीन जैसे दार्शनिक और वैज्ञानिक ने गांधी के विषय में कहा हैं–

"आने वाली पीढ़ियाँ संभवतः मुश्किल से ही यह विश्वास करेगी कि गांधी जी जैसा हाड़–मांस का पुतला कभी इस पृथ्वी पर हुआ होगा।" गाँधी जी ने अपनी विचारधाराओं के माध्यम से भारत वासियों को ही नहीं वरन सम्पूर्ण मानव जाति को जो कुछ भी दिया है, उनको आंकना सम्भव नहीं है। जहां एक ओर सामान्य जीवन में उन्होंने लोगो को सत्य, अहिंसा, प्रेम,

दया, सहयोग, परोपकार, श्रम कार्य के प्रति सम्मान आदि के भावों को जागृत करके व्यक्ति के जीवन दर्शन को ही बदल कर, रख दिया है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान **"बुनियादी शिक्षा योजना"** के रूप में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान समय में गांधी जी की बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता की विस्तार पूर्वक विवेचना करना है।

बुनियादी शिक्षा क्या है?

गांधी जी ने सन् 1937 में 'वर्धा शिक्षा योजना' का सूत्रपात किया। 'वर्धा शिक्षा योजना' एक ऐसा शैक्षिक सुधार था, जो भारतीय शिक्षा के इतिहास में आज तक के सर्वाधिक लोकप्रिय सुधारो में से एक है। उस समय देश में प्रचलित शिक्षा को गांधी, जी **ने पुस्तकीय, अव्यावहारिक** क्लर्क बनाने वाली, एकांगी, जीवन से दूर कुछ थोड़े, से लोगों, को प्राप्त, विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली एवं भारतीय परम्परा और संस्कृति से असम्बन्धित बताया था।

इसे बुनियादी (आधार भूत) शिक्षा क्यो कहा? क्योंकि यह शिक्षा, राष्ट्रीय सभ्यता, संस्कृति एवं शिक्षा संगठन के आधार के रूप, में प्रस्तुत की गई। यह शिक्षा सभी भारतीय को ऐसा आधार भूत, ज्ञान प्रदान करने के लिए निर्मित की गई कि जो उनको अपने वातावरण को बुद्धिमत्तापूर्वक समझने एवं प्रयोग करने में सहायक हो। इसमें शिक्षा का केन्द्र बिन्दु कोई हस्त कार्य होगा। इस लिए इसे बेसिक (आधार भूत) शिक्षा कहा है।

"बेसिक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा प्रणाली से है, जो बालको को पुस्तकीय और अव्यावहारिक शिक्षा से हटा कर एक मूल उद्योग पर आधारित व्यावहारिक और सर्वांगीण विकास की शिक्षा देती है।"

गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा, बुनियादी सिंद्धातों पर आधारित हैं ये बुनियादी सिंद्धात **निः शुल्क अनिवार्य शिक्षा, मातृ भाषा के माध्यम से शिक्षा, स्वावलम्बी शिक्षा, जीवन से संबधित शिक्षा, हस्त कौशल पर आधारित शिक्षा** एवं **नागरिकता की शिक्षा है।**

बुनियादी शिक्षा व्यक्ति और समाज के बुनियादी घनिष्ट सम्बन्धों पर आधारित है। इसीलिये बुनियादी शिक्षा जहाँ एक ओर व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाती है। वहीं दूसरी ओर समाज को भी स्वावलम्बी बनाती है। इस प्रकार यह व्यक्तिगत शिक्षा के साथ–साथ सामाजिक शिक्षा भी है। सन् 1953 ई0 में भारत सरकार द्वारा प्रकाशित, "Understanding of Basic Education" में बुनियादी शिक्षा को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है, "बेसिक स्कूल में व्यक्तिगत और सामुदायिक स्वतन्त्रता की क्रियाएं सबसे प्रमुख मानी जाती है। शिशु की शिक्षा बालको के मस्तिष्क में अव्यावहारिक विचारों को ठूंसना नहीं है। वह मूल रूप से उन्हें अच्छी आदतों नित्य कर्म, दांत, नाक, आंखो की सफाई, स्नान, शारीरिक व्यायाम, कपड़े धोना तथा अन्य दैनिक क्रियाओं के अनुभवों से प्रशिक्षित करना हैं, जिससे अच्छी आदतों का निर्माण हो सके।"

बुनियादी शिक्षा के उद्देश्यों में भारत की दृष्टि से उपयोगी शिक्षा, बालको का सर्वांगीण विकास, अच्छी नागरिकता, सर्वोदय की भावना, नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास, क्रियात्मक शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं व्यावसायिक शिक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है।

गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम में शिल्प कार्य के अर्न्तगत कृषि, काष्ठकला, कताई, बुनाई, चमड़े का कार्य, मत्स्य पालन, कुम्हार का कार्य, बागवानी, फल संरक्षण स्थानीय हस्त कला को प्रमुखता दी गयी है।

शैक्षिक विषय के अन्तर्गत मातृ भाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन, प्रकृति अध्ययन, जन्तु विज्ञान, शारीरिक स्वास्थ्य विज्ञान, खगोल विज्ञान, स्वास्थ्य और महान व्यक्तियों की जीवनियां, हिन्दी, गृह विज्ञान, कला एवं शारीरिक शिक्षा (व्यायाम) को सम्मिलित किया गया।

बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम को एकीकृत रूप में लगभग 5.5 घण्टे प्रतिदिन की अवधि के लिए निर्मित किया गया था। सभी विषयों के लिए निर्धारित पृथक–पृथक अवधि रखी गयी। बुनियादी शिक्षण की विधियों में क्रिया एवं अनुभव द्वारा सीखना एवं सह सम्बन्ध द्वारा सीखना विधि को मान्यता दी गई।

बुनियादी शिक्षा में गांधी दर्शन–एक मूल्यांकन

गाँधी जी के चिंतन में बुनियादी शिक्षा का अतयंत विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है, क्योंकि वे इसे व्यक्ति के सामाजिक आर्थिक प्रगति, भौतिक विकास, राजनीतिक जागरूकता और नैतिक विकास का माध्यम मानते थे। उनके अनुसार साक्षरता का, अर्थ यर्थाथ में शिक्षा नहीं है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मन और शरीर के विकास के संभावना को विकसित करना है। मन के विकास के लिए मौलिक सत्यों और शक्तिशाली विवेकशक्ति की जानकारी अति आवश्यक है। तर्क शास्त्र से मन की शक्तियों का प्रस्फुटन होता है। शारिरिक पक्ष के संबंध में गांधी जी का मानना है कि व्यक्ति को शारीरिक श्रम करना चाहिए। बुनियादी शिक्षा की गांधी वादी धारणा में इसका उद्देश्य शरीर (body) मन (Mind), हृदय (Heart) तथा आत्मपरकता (Spirit) की भावना को विकसित करना है। सच्ची शिक्षा व्यक्ति की मानसिक, और शरीरिक क्षमता के विकास का माध्यम है। गांधी जी का मानना था, कि सार्थक शिक्षा व्यक्ति के अन्तस में विद्यमान चेतना को जगाती है। सार्थक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति में छिपी प्रतिभा को प्रकाश में लाया जा सकता है इसलिए गांधी, जी के चिन्तन में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में विद्यमान सर्वश्रेष्ठ को बाहर लाना है। गांधी जी लिखते है, साक्षरता का कोई अन्तिम बिन्दु नहीं है। यह मनुष्य को शिक्षा के योग्य बनाने का माध्यम है।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य मात्र 'अच्छे मनुष्य पैदा' करना नहीं है वरन ऐसे मनुष्य का निर्माण करना है, जो अपने सामाजिक, उत्तरदायित्वों का पालन करें। वह कोई भी शिक्षा, जो इस उद्देश्य को प्रकाशित नहीं करती, वह शिक्षा अधूरी, आंशिक और निरर्थक है।

यूं तो गांधी जी आदर्श वादी थे। पर यर्थाथ में गांधी जी एक प्रयोगवादी थे जो शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष की अपेक्षा व्यावहारिक पक्ष को अधिक महत्व देते है। वे मानते थे कि सामाजिक लक्ष्य की प्राप्ति में भागीदारी करने वाले मनुष्य, सामाजिक मनोवृत्ति (Social Spirit) के विकास में सहायक होते है, जिससे सामाजिक हित का प्रादुर्भाव होता है। गांधी जी की दृढ़ मान्यता थी कि शिक्षा को मनुष्य के व्यक्तित्व और प्रकारान्तर से उसे गतिशील समाज के सदस्य के रूप में विकसित होने के माध्यम के रूप में परिभाषित किया जाना चाहिए। एक सहकारी समाज के संरचनात्मक सदस्य होने के नाते उसके व्यक्तित्व का सामाजिक पक्ष विशेष महत्वपूर्ण है।

गांधी जी शिक्षा में **अनुशासन** को विशेष महत्व देते है, इसके अभाव में शिक्षा 'बिना पतवार के नाव' की भांति है। अनुशासन का उदभव स्थल मनुष्य का स्व (Self) हो, जो बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक पक्ष का नियमन करता हैं। गांधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य, साहस, करूणा, वैमनस्यहीन और निष्पक्ष दृष्टिकोण का विकास करना उनके विचार में अकादमिक विद्वता तथा श्रेष्ठता उच्चतर स्थिति को प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है। गांधी जी का मानना

था कि शिक्षा अपने में कोई लक्ष्य नहीं वरन एक माध्यम है, जो आत्म शक्ति और चरित्र से युक्त व्यक्ति का निर्माण करती है। यदि शिक्षा व्यक्ति में दृढ़ता, सत्यता, धैर्य आदि का विकास नहीं करती हैं, तो वह उस पुष्प की भांति है, जिसमें कोई गंध नहीं होती है। पुनः गांधी जी का मानना था कि शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं, जो व्यक्ति में सहयोग, सहनशीलता, सार्वजनिक मनोवृत्ति (public, sipirt) और "उत्तरदायिकता (responsiblites) के गुणा का विकास करती है। "

गांधी जी मूलतः एक व्यक्तिवादी थे। यह कह पाना कठिन है कि गांधी जी के अनुसार शिक्षा का अभीष्ट व्यक्ति है अथवा समाज वे मनुष्य के आत्म–विकास की बात, करते हैं। परन्तु वे इस बिन्दु पर भी स्पष्ट थे कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतएव उसके विकास, में ही समाज का विकास निहित है। इसलिए वे असीमित स्वतन्त्रता के समर्थक नहीं है, उन्होंने शिक्षा के सामाजिक लक्ष्य को विशेष रूप से रेखांकित किया है। वे न तो रूसों की भांति असीमित व्यक्तिवादी में विश्वास करते थे और न ही काण्ट और हीगल के इस तर्क को स्वीकार करते थे कि व्यक्ति और राज्य के हितो में कोई विरोध नहीं होता। गांधी जी इस बात से सहमत है कि जनमानस की समस्याओं का निराकरण शिक्षा के सामाजिक स्वरूप से ही किया जा सकता है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति के वयैक्तिक व सामाजिक, दृष्टि कोण का विकास होता है। इससे व्यक्ति को नैतिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा मिलती है। यही कारण है कि गांधी जी शिक्षा को चरित्र निर्माण का माध्यम मानते थे।

नैतिक मूल्यो से विशेष सम्बद्ध गांधी जी ने **धार्मिक शिक्षा** पर बल दिया है। गांधी जी के पूरे शिक्षा दर्शन का समग्र उद्देश्य एक नैतिक मनुष्य का निर्माण करना है। वे मानते है कि शैक्षणिक संस्थाओं में नैतिक शिक्षा के भाग के रूप में धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिए। वे यद्यपि यह स्वीकार करते है कि प्रार्थना मानव आत्मा का भोजन है, फिर भी वे यह भी मानते थे कि अध्यात्मिक शिक्षा सन्तुलित मनुष्य पैदा करने के लिए आवश्यक है। उन्होंने हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई विद्यार्थियों को क्रमशः गीता, कुरान और बाइबिल के नियमित अध्ययन के लिए निर्दिष्ट किया। वे इस बात को लेकर, दुःखी थे कि स्वतन्त्र भारत में नैतिक शिक्षा को शिक्षा में यथोचित स्थान नहीं दिया गया है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि विधार्थी समुदाय भारत की सांस्कृतिक विरासत से परिचित नहीं हो पाता है। यहां गांधी जी द्वारा नैतिक और धार्मिक शिक्षा पर अत्यधिक बल दिये जाने को धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा के विपरीत माना जा सकता है। ऐसा कहा जा सकता हैं कि धार्मिक शिक्षा धर्मनिरपेक्षता की अवधारणों के, वितरीत है क्योंकि यह धार्मिक विभेद को जन्म देती है। परन्तु यदि हम गांधी के समग्र धार्मिक दर्शन को समझने का प्रयत्न करे तो शायद उनके धार्मिक दर्शन के धर्म निरपेक्षता के विरूद्ध होने की बात से, हम सहमत, न हो? गांधी जी धर्म को सत्य और अहिसा से समीकृत करते थे और मानते थे कि जो कुछ भी व्यक्ति नैतिक जीवन, में योगदान देता है, उसे शिक्षा के पाठ्यक्रम में सभी धर्मो के मूल सिद्धांत का वर्णन होना चाहिए, इससे मनुष्य में अन्य धर्मो के प्रति सहिष्णुता का भाव विकसित होता है।

गांधी जी मानते थे कि विद्यार्थियों को विकासशील देशो में अपनी राष्ट्रीय भूमिका के प्रति सचेत होना चाहिए परन्तु वे शैक्षणिक संस्थाओं में छात्र–राजनीति के बिल्कुल, विरूद्ध थे उनका मानना था कि इसके माध्यम से निहित स्वार्थ, अपने क्षुद्र हितो की पूर्ति करते है। गांधी जी ने देश में युवा वर्ग की जिस भूमिका का निर्धारण किया, उसमें शक्ति की राजनीति बाधक है।

बुनियादी शिक्षा की गांधीवादी धारण में इसके सिद्धांत, पाठ्यवस्तु, कार्यक्रम पद्धति तथा

लक्ष्यो का विस्तार से वर्णन किया गया है। गांधी जी के अनुसार विद्यालय में बागवानी, बुनाई, सूत कताई तथा बढ़ाईगिरी जैसे व्यवसायिक दृष्टि से उपयोगी शिक्षा का प्रावधान किया जाना चाहिए। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से ही दी जानी चाहिए उनका विचार है कि 06 से 14 वर्ष तक की शिक्षा निःशुल्क मुफ्त तथा अनिवार्य होनी चाहिए।

गांधी जी इस तथ्य से परिचित थे कि, प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण जनमानस की समस्याआं का काफी हद तक निराकरण किया जा सकता है। यह सर्वसुलभ होनी चाहिए यह दुर्भाग्य का विषय है कि, स्वतन्त्रता के इतने वर्षो बाद गांधी जी के स्वप्न स्वतंत्र सार्वभौमिक प्राइमरी शिक्षा को क्रियन्वित करने का प्रयास सरकार द्वारा अब किया जा रहा है। ऐसे देश में जहाँ काफी संख्या में लोग निरक्षर है, वहाँ सार्वभौमिक शिक्षा के द्वारा आज्ञानता से गरीबी को दूर किया जा सकता है। गांधी जी का यह मानना था कि, शिक्षा के लिए बड़ी–बड़ी इमारतो की आवश्यकता नहीं होती। गांधी जी का मत था कि, शिक्षा सभी तकनीकी और प्रक्रियाओं का एक समुच्चय है, जिसके द्वारा व्यक्ति के गुणों, दृष्टिकोणों, मनोवृत्ति और सहयोगात्मक रवैये को विकसित किया जाता है। यानि, गांधी जी नैतिक शिक्षा की बात करते हुए भी शिक्षा द्वारा जीविकोपार्जन अर्जित करने का लक्ष्य नकारते नहीं है।

गांधी जी की शिक्षा योजना में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उनके विचार में शिक्षा का आर्थिक विकास से घनिष्ट संबंध है। कोई भी, शैक्षणिक व्यवस्था जो समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक नहीं होती है, निरर्थक है। उनका मानना था कि शैक्षणिक सस्थाओं में व्यावसायिक शिक्षा अनिवार्य दी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त गांधी जी का मानना है कि शैक्षणिक व्यवस्था किसी समाज के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होनी चाहिए। अतः शैक्षिक संस्थाओं में कार्य अनुभव का भी प्रबंध किया जाना चाहिए। संभवतः गांधी जी के मस्तिष्क में ऐसे आदर्श नागरिक का विचार या, जो अपने मस्तिष्क, हृदय तथा हाथो का प्रयोग करते हुए अपने सामाजिक दायित्व की पूर्ति कर सके।

गांधी जी व्यावसायिक शिक्षा को 'ज्ञानार्जन' का विकल्प नहीं मानते। वे कार्य अनुभव पर बल देते है ताकि मनुष्य अपनी रचनात्मक क्षमता को बढ़ा सके। कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कार्य अनुभव के महत्व को रेखांकित किया है, इसके अनुसार 'हम यह संस्तुति करते है, कि कार्य अनुभव को घर, स्कूल, वर्कशाप आदि में उत्पादनकारी सहभागिता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा स्व समर्थित (Self Supporting) होनी चाहिए। शिक्षा ग्रहण करने के साथ विद्यार्थी को किसी रोजगार की भी शिक्षा देनी चाहिए ताकि शिक्षा समाप्ती के उपरान्त वह सहजता से अपना जीविकोपार्जन कर सके। गांधी जी के लिए शिक्षा का अर्थ है– आत्मनिर्भरता गांधी जी के शब्दों में "आपको इस विचार से शुरूआत करनी होगी कि ग्रामीण जीवन की समस्याओं के निराकरण हेतु शिक्षा को स्व समर्थित बनाया जाना चाहिए। यदि इसे अनिवार्य बनाना हो तो" शिक्षा को सामाजिक, सामुदायिक और नागरिक प्रशिक्षण का साधन बनाया जाना चाहिए। एक विद्यार्थी को अपने अधिकारो और उत्तरदायित्वों के प्रति सचेत होना चाहिए। एक प्रबुद्ध नागरिक होने के नाते उसे संगठित समुदाय के सदस्य के रूप में जिम्मेदारी का निर्वहन करना चाहिए।

बुनियादी शिक्षा या तालीम 'करके सीखना (Learning by doing) के मौलिक सिद्धांत पर आधारित है। गांधी जो की शिक्षा पद्धति "क्रियात्मक शिक्षा" पर आधारित है।

गांधी जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा व्यवस्था छात्र और अध्यापक के मध्य घनिष्ट संबंध पर आधारित है। सहयोग, अनुशासन, त्याग ईमानदारी तथा निडरता गुरू और शिष्य के मध्य संबंध से ही विकसित होती है। गांधी जी शिक्षा के क्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप के विरोधी नहीं है परन्तु इनकी दृष्टि में यह वांछनीय होगा, कि राज्य इस सन्दर्भ में वित्तीय सहायता, प्रदान, करने तक ही सीमित रहे। शैक्षणिक, संस्था को अपने विषयों या विकास के सन्दर्भ में स्वायतत्ता होनी चाहिए। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि पाठ्यक्रम इस प्रकार का हो, जिससे कि एक आत्मनिर्भर और अच्छे नागरिको के, निर्माण में सहायता मिले सके। ऐसे व्यक्ति, जो सामाजिक हित, साधन में अपना योगदान दे सके। पाठ्यक्रम गणित, सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान, हिन्दुस्तानी कला, और संगीत का समावेश होना चाहिए। पाठ्यक्रम का मुख्य बल भौतिक पर्यावरण, और समाजिक पर्यावरण के मध्य तालमेल स्थापित करना होना चाहिए।

गांधी जी एक जागरूक मानव की परिकल्पना करते है। वे प्रत्येक व्यक्ति को उसके निर्माणकारी वर्षों के दौरान प्रशिक्षित करके उसे जीवन के सामाजिक उत्थान के 'यज्ञ' का भागीदार बनाना चाहते है। बुनियादी शिक्षा सहकारी है। क्योंकि, यह सहयोग भाव को विकसित करते हुए व्यक्ति और समाज को स्वीकृत करने के महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करती है। यह व्यावहारिक धरातल पर हिंसा को नकारती है। व्यक्ति की नैतिक भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकता की पूर्ति अहिंसक माध्यम से की जा सकती है।

वर्तमान समय में प्रासांगिकता

भारत के समसमियक इतिहास में गांधी जी की बुनियादी शिक्षा की धारण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आज के परिवेश में बुनियादी शिक्षा अच्छे नागरिक पैदा करने के माध्यम के रूप में देखी जा सकती है। जो सत्य, अहिंसा, न्याय और समरसता पर आधारित है। व्यक्ति की सही स्वतन्त्रता लोकतन्त्र में ही सुरक्षित है। बुनियादी शिक्षा के माध्यम से स्वतन्त्र और उत्तरदायी नागरिक का निर्माण संभव है। एक, आत्म निर्भर जीवन, और आत्म निर्णय के अधिकार को बरकरार रखने के लिए राज्य द्वारा ऐसी परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है, जिनकी सहायता से व्यक्ति अपना सम्पूर्ण नैतिक विकास कर सकता है।

आधुनिक भारत सत्य और न्याय के पुरातन मूल्यों पर आधारित है। व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के मूल्यों को अहिंसक तरीको से प्राप्त करना समकालीन भारत की सबसे बड़ी चुनौती हैं। बुनियादी शिक्षा मनुष्य को इस योग्य बनाती है कि वह विभिन्न मुद्दों का निरपेक्ष परीक्षण कर सके। आगे चलकर इसके आधार पर नैतिक मूल्यों पर आधारित गांधीवादी समाज का निर्माण संभव हो सकता है। परन्तु व्यावहारिक धरातल पर समकालीन मनुष्य में स्वार्थ का सार्वभौमिक तत्व परिलक्षित होता हैं। इसके कारण समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य संघर्ष होता है।

बुनियादी शिक्षा की गांधी वादी धारणा का उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जिसके सदस्यों मे स्वार्थ के साथ–साथ परहित का भाव भी विद्यमान हो। आधुनिक युग में मनुष्य की विपत्ति का सर्वप्रमुख कारण भौतिक वस्तुओं के प्रति उसकी असीमित आसक्ति है। गांधी जी अपने शिक्षा सिद्धांत के माध्यम से 'सादगीपूर्ण जीवन और उच्च विचार इस प्रकार की जीवन शैली से सामाजिक समरसता आर्थिक विकास तथा राजनीतिक स्थिरता को प्रेरित करती हैं। बुनियादी शिक्षा से सकारात्मक दृष्टिकोण का आर्विभाव होता है। यह बुनियादी शिक्षा का सर्व प्रमुख गुण है। इस रूप में यह समसामयिक परिस्थितियों में अति प्रासंगिक है। गांधी जी मानते है कि बुनियादी शिक्षा से लोगों में

सकारात्मक कार्य संस्कृति विकासित की जा सकती है। गांधी जी की बुनियादी शिक्षा **समाजिकता, मैत्री और वैयक्तिक स्वतंत्रता,** का पोषण करती है। कहना न होगा कि ये तीनों तत्व नैतिक सामाजिक व्यवस्था के अटूट भाग है।

गांधी जी अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिए जाने का विरोध करते है उनका मानना है कि इसके द्वारा प्रतिभा के विकास पर उतना ध्यान नहीं जाता, जितना कि बाहय आडम्बर पर गांधी जी की धारणा है कि इस प्रकार की शिक्षा की कोई व्यावहारिक उपयोगिता नहीं है। बुनियादी ज्ञान और कार्य क्षमता के मध्य नैसर्गिक संतुलन के विचार पर आधारित है। यह आलोचनात्मक जांच और निर्णयन की क्षमता, को जिन्दा रखते हुए हृदय और मस्तिष्क को पोषित करती है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह **सामाजिक तनाव और संघर्ष** को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। यह समाज में **श्रम की गरिमा** को स्थापित करती है। आर्थिक बिन्दु पर यह **उत्पादनकारी श्रम** को जन्म देती है, क्योंकि इसका मुख्य बल रोजगारोन्मुख शिक्षा पर है। वस्तुओं और सेवाओं के माध्यम से यह लोगो के जीवन स्तर में सुधार लाने की भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्ष

अन्त में हम वह सकते है कि बुनियादी शिक्षा विषयक गांधी जी के विचार न केवल नए विचारो के सवांहक बन सकते है वरन् ये एक जीवन दर्शन का प्रतिपादन करते है। गांधी जी न तो व्यावसायिक शिक्षाविद है और न ही वे शिक्षा के सिद्धांतों को वैज्ञानिक रूप देने का प्रयास करते है वरन् उनके शिक्षा विषयक विचार मनोवैज्ञानकि समाजशास्त्रीय और आर्थिक सिद्धांतो पर आधारित है। यह वांछनीय होगा कि समसामयिक परिप्रेक्ष्य में सरकार, शिक्षा के गांधीवादी सिद्धान्त पर गहनता से विचार करे ताकि आधुनिकीकरण के लक्ष्य को सरलता से प्राप्त किया जा सके।

संन्दर्भ

- ❖ पाण्डे, राम शकल, आधुनिक भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद प्रकाशन
- ❖ पाल,एस0के0महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री कैलाश प्रकाशन
- ❖ शील अवनीन्द्र, उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षक, साहित्य रत्नालय प्रकाशन
- ❖ शुक्ला, बाजपेई, वाला, शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजिक परिप्रेक्ष्य, आलोक प्रकाशन
- ❖ पान्डे, राम शकल, भारत के महान शिक्षा शास्त्री, विनोद प्रकाशन
- ❖ समाचार पत्र, पत्रिकाएं

Websites

- https//www.drishtias.com
- https//www.rashtriyashiksha.com
- https//www.educationmirror.org
- https//www.livehindustan.com
- https//www.allresearchjournal.com
- https//www.researchgat.net
- https//www.dspmuranchi.com

Copyright © 2017 *Dr. Beena Yadav*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.